डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/2021-23
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 2 से 3, पृष्ठ सं. 112
प्रकाशन दिनांक : 1 से 1 प्रतिमाह

आर.एन.आई क्र. : 38470/83
आई.एस.एस.एन. क्र. : 2456-7167
मूल्य 25/-

39 वाँ वर्ष

अक्षरा

190

साहित्य की मासिकी

जनवरी 2021

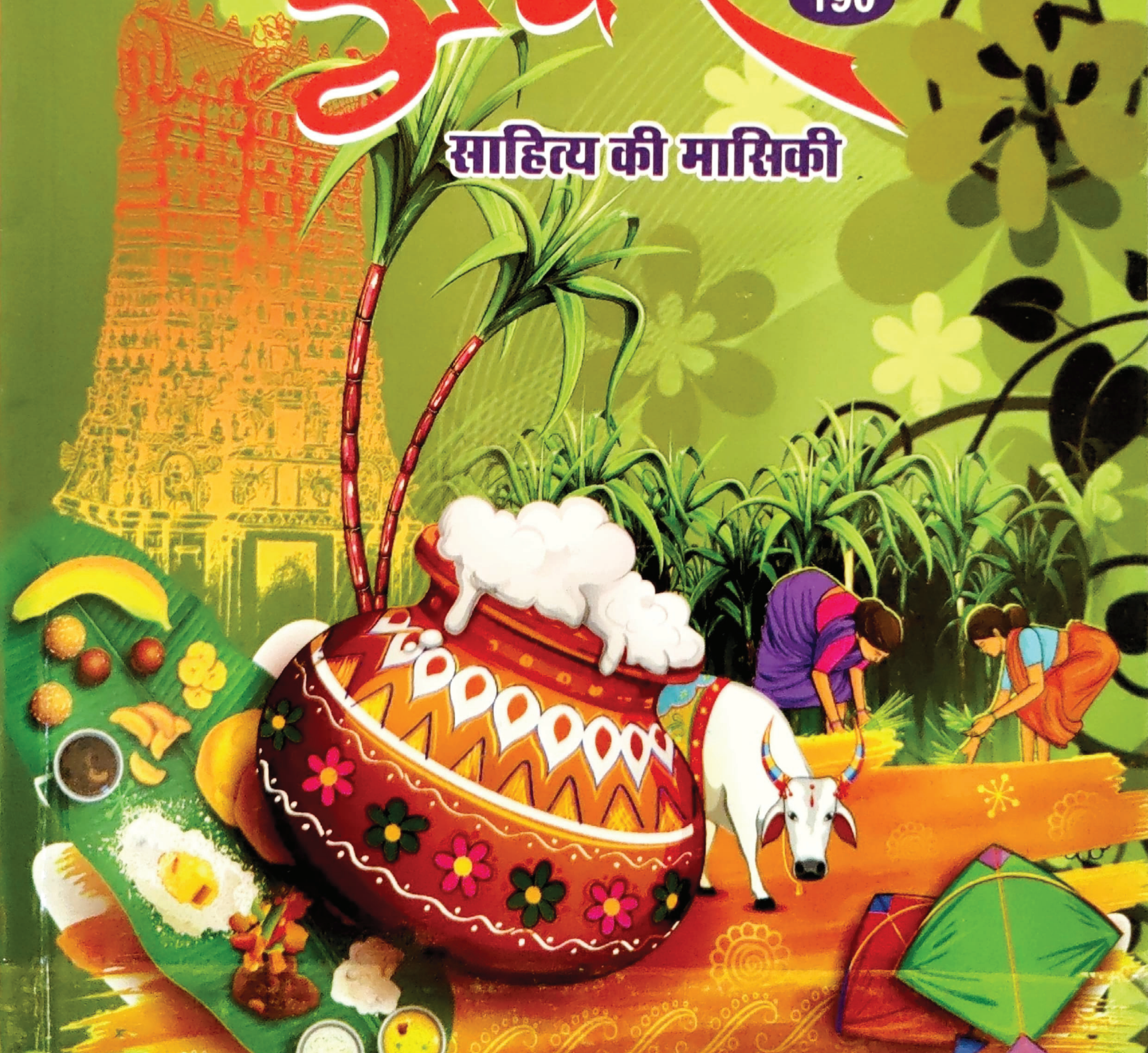

अक्षरा

190

यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त

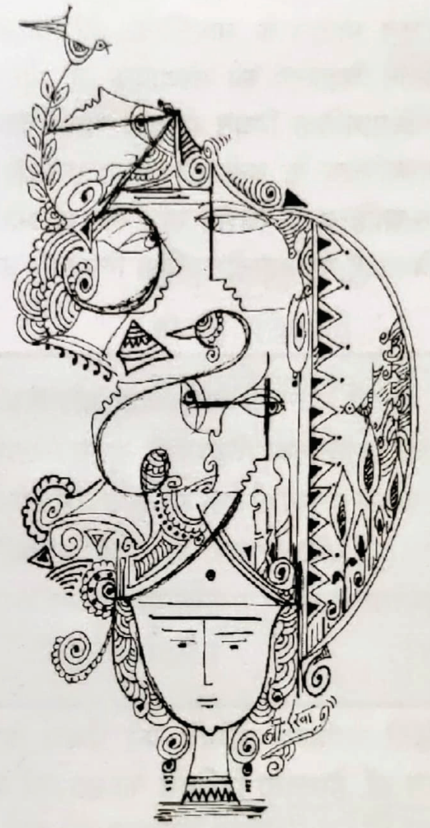

कैलाशचन्द्र पन्त
प्रधान सम्पादक

सुशील कुमार केडिया
प्रबंध सम्पादक

डॉ. सुनीता खत्री
सम्पादक

श्रीमती-जया केतकी
सम्पादन सहयोग

सुधा बाथम
अक्षर-संयोजन

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 300 रुपए
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
एक प्रति 25 रुपये
विदेशों के लिए : एक अंक : 5 डॉलर, वार्षिक : 60 डॉलर
चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षरा' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इलाहाबाद बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल
Ac/ No. 50413818696, IFSC-ALLA 0212241

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshara18@gmail.com
hindibhawan.2009@rediffmail.com
वेबसाइट - www.akshara.page, www.madhyapradeshrashtrabhasha.com

प्राप्ति 12/01/2021

अक्षरा

अंक 190 जनवरी 2021

सम्पादकीय

नववर्ष का गीत : **देवेन्द्र रावत** 3

सबद निरन्तर

प्रसंगवश : कुछ सामयिक प्रकरण : **रमेशचन्द्र शाह** 9

आलेख

अध्यात्म और ध्यान : **नरेश** 13

एलोपैथी का विकल्प बनता आयुर्वेद : **प्रमोद भार्गव** 16

देश के सम्मान का प्रतीक : राष्ट्रध्वज : **सतीश सिंह** 20

नवगीत में यथार्थवाद : **राघवेन्द्र तिवारी** 24

कामायनी में वर्णित नारी : **लतिका खानवलकर** 27

एक साहित्यिक की डायरी : भीतर–बाहर मुक्तिबोध : **राजेन्द्र परमार** 29

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण : **अल्पना शर्मा** 34

वैचारिक साहित्य के अनुवाद का समाजशास्त्र : **गिरीश काशिद** 38

मालवा का सांस्कृतिक वैभव : **नेहा दीक्षित** 42

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना : **रेखा आर. एस.** 45

जनजातियाँ : विकास, विस्थापन और वर्तमान परिदृश्य : **जनक सिंह मीना** 48

रघुवीर सहाय का काव्य–संघर्ष : **सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी'** 53

गाँधी का हिंदुत्व : **सुरेश गर्ग** 56

साक्षात्कार

प्रो. सुब्रमनी से विमलेश कांति वर्मा की बातचीत 59

ललित निबंध

लोकमंगल के कुमकुम कलश : **श्रीराम परिहार** 65

कहानी

माणस बीज : **सुदर्शन वशिष्ठ** 71

जैसी तेरी तोमरी वैसे मेरे गीत : **प्रतिभा सिंह** 78

लघुकथा
दर्पण पर धूल : **सूर्यकांत नागर** 83
पद या कद : **उषा जायसवाल** 85
मूर्तिकार : **छाया त्रिवेदी** 86

कविता
आओ करें हम राष्ट्र वंदना : **सुभाष चन्द्र 'सरल'** 87
मोक्ष और मणिकर्णिका : **गिरिजा किशोर पाठक** 88
राम अ विराम हैं, आते-जाते : **मनोहर पटेरिया 'मधुर'** 89
कैसी तो विवशता, सो जाता है निश्चिंत : **रमेशचंद्र पंत** 90
कौन है आदिवासी : **नवीना जे नारितुक्किल** 91
दुर्गा प्रसाद झाला की चार कविताएँ 92

बाल-पृष्ठ
देश चिंतन, जग गण मन-गान् : **ओम उपाध्याय** 93

समय और विचार -11
ई. एफ. शूमाकर : भ्रमित आदमी के आनंद की खोज : **रमेश दवे** 94

पुण्यतिथि पर विशेष
काल पर छूटी निशानी (सं.-पवन माथुर) : **निशा नाग** 99

पुस्तक चर्चा
साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन (के. वनजा) : **रंजना अरगड़े** 102

पुस्तक परिचय
मीना सिंह के दो काव्य संग्रह : **राधारानी चौहान 'मानवी'** 105

समीक्षा
नदी की उँगलियों के निशान (कुसुम भट्ट) : **बद्री सिंह भाटिया** 106
दंडनायक (उमाकांत खुबालकर) : **युगेश शर्मा** 107
स्त्री मुस्कुराती है (मंजुषा मन) : **मनीष वैद्य** 108
आखिरी झूठ (हरीलाल मिलन) : **रेशमी पांडा मुखर्जी** 109
आदमी और आदमी (रमेश मनोहरा) : **आशीष दशोत्तर** 110

पत्रांश 111

वैचारिक साहित्य के अनुवाद का समाजशास्त्र

– गिरीश काशिद

जन्म – 10 अप्रैल 1973।
जन्म स्थान – सोलापुर (महाराष्ट्र)।
शिक्षा – एम.ए., पी.एचडी।
रचनाएँ – पाँच पुस्तकें प्रकाशित, कतिपय सम्पादित। अनुवाद में विशेष कार्य।
सम्मान – म. गाँधी अं. हिंदी वि.वि., वर्धा द्वारा हिंदी सेवी सम्मान।

विश्व सभ्यता और संस्कृति के विकास को देखा जाए तो उसमें अनुवाद की अहं भूमिका रही है। अनुवाद दो भाषाओं के बीच सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों के आदान-प्रदान का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अनुवाद के द्वारा एक भाषिक समाज दूसरे भाषिक समाज की संस्कृति और जीवन से अवगत होता है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद मानो एक वरदान है। क्योंकि बहुभाषिक समाज का वैचारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान अनुवाद पर ही निर्भर होता है। अनुवाद ने मानव जीवन को व्यापक बनाने का, उसे एक नया आयाम देने का कार्य किया है। अनुवाद के माध्यम से कथ्य का भाषिक अंतरण होता है। यह होते समय इसमें कथ्य के साथ उस भाषा से संबंद्ध संस्कृति का भी अनुवाद होता है।

भारतीय साहित्य का अन्य देशों की भाषाओं में अनुवाद हुआ लेकिन विदेशी भाषाओं के भारतीय भाषाओं में अनुवाद कम हुए। भारतीय अनुवाद परंपरा को देखा जाए तो इसके कई संदर्भ उजागर होते हैं। भारत में मध्यकाल में लोकभाषाओं का विकास हुआ। लोकजागरण को अनुवाद के संदर्भ में देखें तो हम पाते हैं कि संतों ने अपनी-अपनी भाषाओं में संस्कृत और पाली के साहित्य का, धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक चेतना को प्रदर्शित करनेवाले ग्रंथों का स्वच्छंद अनुवाद किया। उपनिषद, महाभारत और रामायण के विचार लोकभाषा के द्वारा प्रस्तुत करने की परंपरा सोलहवीं सदी से अठारहवीं सदी तक पाई जाती है। सन् 1644 में हरवल्लभ ने, सन् 1669 में भगवानदास ने तो सन् 1707 में आनंदराम ने गीता के हिंदी में अनुवाद किए। मध्यकाल में हारी हुई चेतना को एक आशा की किरन दिखाने का कार्य अनुवाद ने किया। इसी काल में तुलसीदास ने 1633 में लोकभाषा में रामचरितमानस के द्वारा रामायण का अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके पहले तेरहवीं सदी में (सन् 1290) मराठी भाषा में संत ज्ञानेश्वर ने 'भावार्थदीपिका' ग्रंथ द्वारा गीता का अनुवाद प्रस्तुत किया। मध्ययुग में अनुवाद ने भक्तिधारा को जनचेतना के साथ जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

इसके बाद अंग्रेजी सत्ता के दौरान भारत में जो नवजागरण की चेतना का प्रस्फुटन हुआ उसमें अनुवाद की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। अनुवाद के माध्यम से हम फ्रांस की राज्यक्रांति, यूरोप का पूँजीवाद, उपनिवेशवाद और पूँजीवाद से परिचित हुए। अनुवाद ने पश्चिम के चिंतन को भारतीय जनमानस तक पहुँचाया। इसी से एक नई चेतना का विकास हुआ जिसने मध्ययुगीन जड़ता को तोड़ने का कार्य किया। उन्नीसवीं सदी में मानव मुक्ति का जो विचार सामने आया उसमें अनुवाद की अहं भूमिका रही है। दूसरी ओर अनुवाद ने भारतीय भाषाओं के बीच आदान-प्रदान को गति प्रदान की। राष्ट्रीय और सांस्कृतिक नवजागरण की दृष्टि से अनुवाद ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसी काल में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हैकल की

यदि पहले से अनुवाद होते तो हमारी भाषाएँ विकसित होती, ज्ञान भंडार बढ़ता। जब तक अपनी भाषाओं में अनुवाद नहीं होते तब तक दुनियाभर के विचार, जानकारी, तकनीकी आम आदमी तक नहीं पहुँच पाती। विकसित देशों की भाषा अपनाकर स्वतंत्र राष्ट्रीय-सामाजिक विकास नहीं हो पाता। मौलिक प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। उनकी पूरी शक्ति भाषा अर्जित करने में ही व्यय होती है। जीवन, प्रकृति और तकनीकी के गहन और संश्लिष्ट विषयों के प्रति चिंतन, विश्लेषण, प्रयोग और अनुसंधान को गति नहीं मिलती।

वैचारिक और वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद परस्पर भाषाओं में होना अत्यधिक आवश्यक है। इससे कई सामाजिक समस्याएँ जड़ से हल हो सकती है। वैचारिक साहित्य में समाज का प्रबोधन करने की, समाज में परिवर्तन लाने की सामर्थ्य होती है। ज्ञान-विज्ञान, मानव्य शाखा का साहित्य, उसके अनुवाद आम लोगों तक पहुँचेंगे तो समाज में प्रचलित विषमता, रुग्णता कम होने में निश्चित ही मदद हो सकती है मार्क्स, फुले, आंबेडकर आदि से संबंध रखनेवाले वैचारिक साहित्य ने इस देश में परिवर्तन की एक लहर लाई, समाज को नये ढंग से सोचने का नजरिया दिया इसे भुलाया नहीं जा सकता। 'फुले-अंबेडकर के वैचारिक साहित्य के अनुवाद से भारत के हर प्रदेश के दलित, आदिवासी और उपेक्षित युवाओं को एक नया आत्मभान आ रहा है, इसे नकारा नहीं जा सकता। वैचारिक साहित्य से समाज अंतर्मुख होकर विचार करने लगता है। संवेदनशील युवा क्रांतिकारी विचार पढ़कर आंदोलन की ओर उन्मुख होता हैं। सृजनात्मक साहित्य की तुलना में अनुवाद के लिए कम चुनौतियाँ होनेवाला यह क्षेत्र है। इसे समृद्ध करने से ही इस समाज के भविष्य की उन्नत दिशा तय होनेवाली है।' **(डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, अनुवाद वर्णव्यवस्था आणि मी, पृ. 76)** वैसे देखा जाए तो सृजनात्मक साहित्य की तुलना में वैचारिक साहित्य का अनुवाद आसान होता है।

वैचारिक साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक की उस विचारधारा के प्रति आस्था, उससे सरोकार, उसके प्रति रुचि होना भी आवश्यक है। इसके अभाव में वह अनुवाद यांत्रिक हो सकता है। दूसरी बात मूल के साथ छेड़खानी भी नहीं करनी चाहिए। इससे कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है। अनूदित कृति को अनुवादक ने बार-बार पढ़ना चाहिए इससे उसके मन में अपने आप एक शब्दावली तैयार होती है। इस अनुवाद में सही शब्दों का चुनाव करना चाहिए। साथ ही वाक्य रचना अनुवाद की भाषा की प्रकृति से मिले इस पर गौर करना चाहिए। लिप्यांतरण के दौरान भी सावधानी बरतनी चाहिए।

अनुवाद ने सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व के विकसित देशों के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में अनुवाद का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। अनुवाद न होता तो बहुसंख्य लोगों तक न्यूटन, डार्विन, मार्क्स, फ्रायड का चिंतन नहीं पहुँच पाता। आधुनिक काल में अनुवाद को गति मिली है। इससे ज्ञान-विज्ञान की चेतना विकसित हो गई है। अनुवाद ने संस्कृति के कई पहलुओं को गतिशील बनाया है। विश्व संस्कृति के विकास में विचारों के आदान-प्रदान में अनुवाद अहं भूमिका अदा कर रहा है। अनुवाद ने सामाजिक चेतना के बदलाव और संघर्ष को प्रबल बनाया है।

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
एस.बी.झेड महाविद्यालय,
बार्शी सोलापुर-413401 (महाराष्ट्र)
मो.-9423281750